किताबों से जुड़ाव बनाने के लिए कुछ प्रयास

दीपाली शुक्ला

विद्यालय में पुस्तकालय की सार्थकता तब और बढ़ जाती है जब शिक्षिका के प्रयास से बच्चों की किताबों से गहरी दोस्ती बन जाती है। यह लेख किताबों के साथ खेल खेलने की एक ही ऐसी दिलचस्प, आनन्ददायक और चुनौती भरी गतिविधि के बारे में है। इसकी प्रक्रियाओं से बनने वाले मौक़ों से बच्चे मिलकर कहानी की किताबें पढ़ते हैं, उनके बारे में सोचते हैं, और आपस में चर्चा करते हुए कल्पनाशील, मज़ेदार सवाल रचते हैं।

चित्र 1 : पढ़ने के बाद सोचते, आपस में चर्चा करते विद्यार्थी

मैं हिनोतिया के सरकारी विद्यालय में बच्चों के साथ बातें कर रही थी। बच्चों ने विद्यालय की लाइब्रेरी की किताबों को पढ़ना शुरू कर दिया था। उनका कहना था कि उन्होंने सब किताबें पढ़ ली हैं। हमने कुछ कहानियों को एक दूसरे से साझा किया। बच्चे उत्साह से बता रहे थे कि कहानी क्या है। काफ़ी बच्चे ऐसे थे जिन्होंने कहा कि किताब पढ़ ली है, पर उन्हें कहानी अभी याद नहीं है। कहानियों पर बात करने के बाद बच्चों का कहना था कि कोई खेल खिलाओ। मैं सोच रही थी कि क्या खेल खेला जाए जिससे बच्चे किताबों के और क़रीब आ सकें, उनका कहानी से जुड़ाव मज़बूत हो, और किताबों पर गहराई से सोचने का मौक़ा मिल सके। सहसा मुझे यह सूझा कि क्यों न सवालों के ज़रिए किताबों की ओर मुड़ा जाए। इससे बच्चों को यह मौक़ा होगा कि वो किताबों को पढ़ेंगे, उन पर सवाल बनाएँगे। यह सवाल एकदम सीधे न हों, और ऐसे भी न हों जो केवल हाँ या नहीं तक ही सीमित हों, बल्कि सवाल ऐसे हों जो सोचने और कहानी के अलग-अलग हिस्सों के बारे में विचार करने का मौक़ा दें।

मैंने 4 बिग बुक चुनीं। बच्चों को 4 समूहों में बाँटा, और हर समूह में एक बिग बुक देकर कहा कि समूह को साथ में किताब पढ़कर उससे कुछ चुनौती भरे मज़ेदार सवाल बनाने हैं जिससे दूसरा समूह उस सवाल के संकेत से किताब को पहचानकर उसका नाम बता सके। हाँ, किताब को धीमे से पढ़ना है ताकि बाक़ियों को पता न चले कि समूह के पास कौन-सी किताब है।

यह सब बच्चे मिडिल स्कूल के थे। मैं देख रही थी कि बच्चे शुरू में सवाल को लेकर कुछ उलझन में थे। मैंने हर समूह में जाकर सवाल बनाने की प्रक्रिया को सुना और फिर सुझाव दिए। उन्हें यह भी कहा कि वह जैसे सवाल बना सकते हैं, बनाएँ।

इसके लिए बच्चों के पास पर्याप्त समय था। वे बार-बार कहानी को पढ़ रहे थे। जब हर समूह ने सवाल बना लिए तब एक-एक समूह ने अन्य समूहों के साथियों से सवाल पूछना शुरू किया। वह कौन-सी किताब है जिसमें ख़ूब सारे पक्षी हैं? ऐसी कौन-सी किताब है जिसमें हर पेज पर एक जानवर है? अन्य समूह के साथी अन्दाज़ा लगा रहे थे। एक समूह ने पहले सवाल के संकेत के आधार पर किताब का नाम बताने में सफलता हासिल की। बच्चे आपस में सवालों पर प्रतिक्रिया भी दे रहे थे। क्या सवाल ठीक था या और बेहतर हो सकता था? यह सवाल बच्चों को किताबों से जुड़ने और उन्हें दोबारा से पढ़ने के लिए प्रोत्साहित कर रहे थे। तुरन्त सोची गई इस गतिविधि के ज़रिए किताब पढ़ने के बाद पाठक प्रतिक्रिया को जानने का एक सिरा दिखा। दूसरा, सवालों को लेकर कैसे काम किया जाए, इसकी एक राह भी मिली। महत्त्वपूर्ण बात यह कि एक समूह में कहानी को पढ़कर चर्चा करना, उसके लिए सवालों को सामूहिक रूप से सोचना, अपने सवाल को लेकर तर्क करना, यह सब होने की भी सम्भावना दिखी। इस तरह चारों समूहों के सवालों और किताबों की खोज के जवाबों की प्रक्रिया को पूरा किया गया।

> **मुझे यह सूझा कि क्यों न सवालों के ज़रिए किताबों की ओर मुड़ा जाए। इससे बच्चों को यह मौक़ा मिलेगा कि वो किताबों को पढ़ेंगे, उन पर सवाल बनाएँगे।**

इस गतिविधि पर बच्चों की प्रतिक्रिया ने यह इशारा किया था कि इसे फिर से बच्चों के साथ करके देखने की ज़रूरत है। ऐसा इसलिए, क्योंकि इस गतिविधि के ज़रिए न केवल बच्चों का किताबों के साथ जुड़ाव बनाने का उद्देश्य था, बल्कि कहानी को गहराई से पढ़ना, उसके पात्रों और घटनाओं को लेकर सोचना, उस पर ऐसे सवालों को सोच पाना जो विवरणात्मक हों, और हाँ या नहीं के बजाय क्यों और कैसे की सोच की ओर ले जाने वाले हों। इसी के साथ, सवालों को बनाने की चुनौती को बच्चे किस तरह से मज़े लेकर करते हैं, और आपस में मिलकर सीखने की यह प्रक्रिया कैसे और ज़्यादा कारगर हो सकती है। इसलिए इस गतिविधि को 'चकमक क्लब' (एक तरह की लाइब्रेरी) संचालित करने वाले बच्चों के साथ करने की योजना बनाई। चकमक क्लब में बच्चे 100 से अधिक किताबों को पढ़ चुके हैं। इनमें कुछ किताबें ऐसी हैं जो बच्चों के अनुसार 10 बार से भी ज़्यादा पढ़ी गई हैं। इसलिए इस गतिविधि के लिए उन किताबों का चयन किया गया जो बच्चों की सबसे प्रिय किताबें रही हैं। *बरास्ता तरबूज़, खिचड़ी, गीत का कमाल, जूँ और टू*, ये किताबें सभी चकमक क्लब में सबसे प्रिय किताबों में थीं। *बरास्ता तरबूज़* एक लड़के सासौ के प्रेम और उसके द्वारा बनाए गए उपहार के बारे में बात करती है। इसमें कई स्थापित सोच पर भी सवाल हैं। *खिचड़ी* एक बुन्देलखण्डी लोककथा है। इसमें बिरजू की खिचड़ी शब्द रटने के तरीक़े से दिलचस्प परिस्थितियाँ बनती हैं। यह परिस्थितियाँ पाठक को अचम्भित करती हैं, और शिक्षा के एक गम्भीर मसले को उभारती हैं। *गीत का कमाल* भी एक बुन्देलखण्डी लोककथा है जो गीत द्वारा किए गए कमाल को रोचक ढंग से प्रस्तुत करती है। *जूँ और टू* में बच्ची द्वारा दुनिया की पड़ताल और उससे जुड़े सवाल हैं।

बच्चों के साथ यह गतिविधि दो बार की गई। एक बार बड़ों ने सत्र संचालित किया, और दूसरी बार बच्चों ने। उद्देश्य था कि बच्चे अपने हमउम्र साथियों के साथ किताबों पर संवाद करें, सवालों पर प्रतिक्रिया दें और इस पूरी प्रक्रिया का अनुभव करें। इस बार छह समूह बनाए गए। हर समूह को एक-एक किताब दी गई। किताब पर अख़बार का कवर चढ़ाया गया जिससे समूहों को एक दूसरे की किताब न दिखे। समूह में ऐसे बच्चे थे जो अच्छे से पढ़ पाते थे और ऐसे भी थे जो पढ़ने के शुरुआती स्तर पर थे। सवाल बनाने की प्रक्रिया में जाने से पहले बच्चों के साथ गतिविधि को लेकर बात की गई। साथ में कहानी पढ़ने, उस पर चर्चा करने और फिर 3 सवाल बनाने का निर्देश दिया गया। यह भी बताया गया कि आप चाहें तो 3 से अधिक सवाल भी बना सकते हैं। हर समूह में एक वयस्क साथी को अवलोकन के लिए शामिल किया गया। इसके बाद समूहों में काम शुरू हुआ। बच्चे किताब के शीर्षक को देखकर आपस में चर्चा करने लगे। हर समूह में जो किताब थी वो आधे से अधिक बच्चों ने पहले पढ़ी थी। चेहरों पर मुस्कान खिल चुकी थी। धीमे-धीमे कहानी को पढ़ने का काम शुरू हो गया। बच्चे यह जानते थे कि बाक़ी समूहों ने भी यह किताब पढ़ी है, इसलिए कुछ ऐसा चुनौती भरा सवाल सोचना होगा जो मज़ेदार हो, और किताब का रहस्य तुरन्त न खोले। मिलकर सवाल बनाने का काम शुरू हुआ। कुछ समूह ऐसे थे जिनमें बच्चों ने अपने-अपने सवाल बनाने का काम किया, और फिर सभी सवालों में से पूछे जाने वाले सवाल चुनने का निर्णय लिया।

आइए, कुछ किताबें और उनके सवालों को देखते हैं–

किताब का नाम : *घर का सपना*

सवाल 1 : वो कौन था, जो ख़ूब रोया, बहुत रोया, अपने-आप को बहुत भिगोया?

सवाल 2 : कौन था, जो था बहुत चिड़चिड़ा, नाक भौं रही उसकी चढ़ी?

सवाल 3 : अनजाने लोगों से कौन दु:खी था और क्यों?

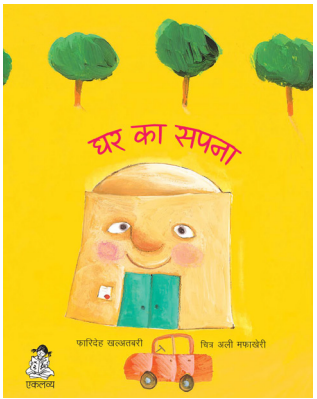

चित्र 2 : लेखक के द्वारा उपयोग में लाई गई किताब

इन सवालों पर थोड़ा ठहरकर विचार करें तो सवाल पात्र और उसकी विशेषता के साथ ही कहानी की किसी ख़ास घटना पर आधारित हैं। काफ़ी हद तक इनमें किताब से जुड़े संकेत हैं।

सवाल बनाने के बाद हर समूह को यह मौक़ा दिया गया कि वो बाक़ी समूहों से एक-एक करके सवालों को पूछें और वह समूह किताब का नाम बताएँ। सवाल पूछने वाले समूह की ही यह ज़िम्मेदारी थी कि वो देखे कि कौन-से समूह ने सबसे पहले

जवाब देने के लिए हाथ उठाया। बच्चों ने समूह के एक साथी को इसकी ज़िम्मेदारी दी। एक साथी सवाल पूछ रही थी। *घर का सपना* किताब के सवालों के समय दूसरे सवाल पर ही एक समूह ने किताब का नाम बता दिया। यह बड़ा मज़ेदार था कि उस समूह के एक बच्चे ने बताया कि घर, हर बार आने वाले मेहमानों से नाराज़ हो जाता था। इससे उसने पहचाना कि यह किताब कौन-सी है। घर ऐसा क्यों कर रहा था? इस पर जवाब मिला कि वह चाहता था कि उसमें बच्चे आकर रहें। फिर बच्चों ने अपने गाँव के ऐसे घरों के बारे में बताया जो ख़ाली हैं और जर्जर हो रहे हैं। इस पूरी बातचीत में बच्चे छाए रहे क्योंकि वे न केवल कहानी के बारे में बात कर रहे थे, बल्कि अपने सवाल पर आपस में तर्क भी कर रहे थे। वह सवाल उन्होंने क्यों पूछा, इसको बता रहे थे। दूसरे समूह के बच्चों के सवाल को लेकर अपने तर्क थे। यह ज़रूरी भी है कि संवाद के ज़रिए अपने-अपने तर्कों पर चर्चा की जाए। विस्तृत चर्चा के बाद बच्चे और सवाल बनाने के लिए उत्साहित थे। चार बच्चों ने इस सत्र को अगले दिन संचालित करने की ज़िम्मेदारी ली। किताबों का चयन बच्चों ने किया। निर्देश कैसे देंगे, इसको लेकर बड़ों से चर्चा की। बच्चों ने जो किताबें चुनीं, वह ऐसी थीं जो हाल ही में उनके पास पहुँची हैं। कई बच्चों ने उनको पढ़ा है। यहाँ दो किताबों से बने एक-एक सवाल को देखते हैं–

किताब का नाम : *बरास्ता तरबूज़*

सवाल : मुझे खा, पर मेरे बच्चे को छोड़ दे, यह किस किताब में होता है? इस सवाल के जवाब में कई किताबों के नाम आए, पर *बरास्ता तरबूज़* का नाम न आया। हाँ, जब समूह ने यह सवाल पूछा कि इस किताब में तीन जानवर हैं तब फिर एक समूह ने इस किताब का नाम बताया। यह मज़ेदार था कि फिर एक समूह कहानी के ख़ास हिस्सों, जैसे– सासौ का तीन जानवरों को ख़रीदना, आख़िरी तरबूज़ को खा जाना, प्रेमिका के लिए नया उपहार अपने हाथों से बनाना, पर बात करने लगा। बच्चों को यह बताना अच्छा लगा कि सासौ को अपने जानवरों की कितनी फ़िक्र है। वह सबको ख़ुद अपने सिर पर उठाकर आगे बढ़ता है।

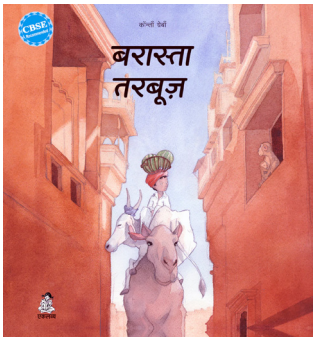

चित्र 3 : लेखक के द्वारा उपयोग में लाई गई किताब

इस खेल प्रक्रिया से हमउम्र साथियों के साथ सीखने का एक बढ़िया मौक़ा था। यह मौक़ा किताबों को पढ़ने से अधिक उस किताब के साथ एक पाठक के रूप में संवाद करने और कहानी से इतर सवालों को सोचने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह बच्चों को सबसे रोचक लगा क्योंकि यहाँ उन्हें ख़ुद यह प्रक्रिया करनी थी, सवाल सोचने थे और किताबों का चयन भी ख़ुद ही करना था। वयस्क साथी केवल सन्दर्भदाता की भूमिका में थे। एक तरह से किताबों के प्रति अपनापन भी बच्चे महसूस कर रहे थे। सवालों पर काम करने का यह अभ्यास किताबों की बारीक़ियों की ओर ले जाने की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण था, और किताब को पढ़कर कुछ नया विचारने की ओर भी ले जाने वाला था। बन्द छोर के सवालों से हटकर बात करने वाले सवालों की यह चुनौती बच्चों के लिए सकारात्मक पक्ष की तरह थी।

एक किताब में काफ़ी कुछ होता है, टेक्स्ट और चित्र, दोनों को पढ़ने में बहुत कुछ नया मिलता है।

शिक्षकों या सन्दर्भदाताओं के लिए ज़रूरी बातें :

1. बच्चों ने जिन किताबों को पढ़ा है उनका इस्तेमाल इस गतिविधि के लिए करें।
2. गतिविधि के लिए चयनित किताबों को आप ख़ुद भी अच्छे से पढ़ लें ताकि मज़ेदार सवाल बनाने में बच्चों की मदद कर सकें।
3. पहली बार जिस भी तरह के सवाल आएँ, उनको वैसे ही गतिविधि में पूछने दें। बच्चों को सवालों पर प्रतिक्रिया देने के लिए प्रोत्साहित करें।
4. पूरी प्रक्रिया का अवलोकन आपको मदद करेगा कि बच्चे किताबों से किस तरह से जुड़ पा रहे हैं, इसलिए आप सवाल बनाकर देने की जल्दबाज़ी न करें।
5. शुरुआत 2 से 3 सवाल बनाने से की जा सकती है।

सन्दर्भ

लेख 'पढ़ना किसे कहते हैं?', अंक 29, *शैक्षणिक संदर्भ*, एकलव्य, भोपाल

लेख '*पढ़ना है समझना*', एनसीईआरटी, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित

लेख 'पढ़ना, लिखना और समझना', अंक 52, *शैक्षणिक संदर्भ*, एकलव्य, भोपाल

दीपाली शुक्ला एकलव्य संस्था के प्रकाशन कार्यक्रम से एक दशक से अधिक समय से जुड़ी हैं। बाल साहित्य पढ़ना पसन्द है। लाइब्रेरी और रीडिंग पर काम करती हैं। 'लाइब्रेरी से दोस्ती' कोर्स से जुड़ी हैं। बच्चों और शिक्षकों के साथ बाल साहित्य को लेकर चर्चा करना भी अच्छा लगता है।

सम्पर्क : deepalishukla99@yahoo.com